Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

महात्मा बुद्ध का आध्यात्मिक संदेश और सर्वधर्म सह-अस्तितव

Dr. Suman Bala[1], Dr. Naveen Kumar[2]

[1] Former Scholar, Guru Jambheshwar Religious Center, Guru Jambheshwar University of Science & Technology, Hisar, Haryana
[2] Former Scholar, Department of Education, Kurukshetra University, Kurukshetra

परिचय

हमारे अनेक बुद्धिजीवी एक भ्रांति के शिकार हैं, जो समझते हैं कि गौतम बुद्ध के साथ भारत में कोई नया 'धर्म' आरंभ हुआ तथा यह पूर्ववर्ती हिन्दू धर्म के विरुद्ध 'विद्रोह' था। यह पूरी तरह कपोल-कल्पना है कि बुद्ध ने जाति-भेदों को तोड़ डाला और किसी समता-मूलक दर्शन या समाज की स्थापना की। कुछ वामपंथी लेखकों ने तो बुद्ध को मानो कार्ल मार्क्स का पूर्व-रूप जैसा दिखाने का यत्न किया है। मानो वर्ग-विहीन समाज बनाने का विचार बुद्ध से ही शुरू हुआ देखा जा सकता है आदि। लेकिन यदि गौतम बुद्ध के जीवन, विचार और कार्यों पर संपूर्ण दृष्टि डालें, तो उन के जीवन में एक भी प्रसंग नहीं कि उन्होंने वंश और जाति-व्यवहार की अवहेलना करने को कहा हो। बौद्ध धर्म विश्व के सभी धर्मों में अपना अद्वितीय स्थान रखता है। इस धर्म ने मानव लोक कल्याण की भावना को जन्म दिया और शान्ति का उपदेश देकर सबसे पहले पंचशील के विषय में अवगत कराया। बौद्ध धर्म के विषय में प्रायः एक भ्रांति लोगों के मन में यह रहती है कि यह मात्र एक धर्म है जो हमें हिन्दू धर्म के विपरीत आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करता है। जबकि वास्तविकता यह है कि बौद्ध धर्म शैक्षिक मानव जीव के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में लोक कल्याण की दीक्षा देता है। लोगों को समता-करुणा-प्यार के साथ रहना सिखाया। बौद्ध धर्म सुखमय जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त करता है। कुरुक्षेत्र के मैदान में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो प्रवचन दिया था। उसका एक महत्वपूर्ण संदेश यही था कि मरोगे तो सीधे स्वर्ग जाओगे और यदि बचे रहे तो इस धरा पर स्वर्ग का सुख भोगोगे। खालसा पंथ में भी शस्त्र धारण करने की परम्परा धर्म रक्षक की भावना के कारण प्रतिष्ठित हुई।

पहले बात गीता की, अगर उसी सूत्र बात को गांठ बांधा जाये तो 'स्वधर्मोः निधने श्रेयः परधर्मोः भयबद्धः' तब धार्मिक कट्टरपंथी और साम्प्रदायिक हठ धार्मिकता के आक्षेप से हिन्दुत्व को कितनी देर तक बचाया जा सकता है | आप चाहे कितनी ही कुशल कसरती कलाबाजी करें वैचारिक शरीर को तोड़े-मरोड़ें धर्म को मजहब

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

नहीं जाति धर्म, देशकाल, सापेक्ष आपद धर्म के रूप में परिभाषित करें- स्वः और पर की भिड़ंत को टाल नहीं सकते। ऐसे ही अगर मैतियाना साहब के दृष्य के बारे में ठण्डे दिमाग से सोचें तो धार्मिक वैमनस्य और इससे पैदा होने वाली हिंसक मुठभेड़ों के ऐतिहासिक यथार्थ को झुठला नहीं सकते | बौद्ध धर्म मन से शांति का संचार करके उसका बाहर प्रसारण करना चाहता है। इस प्रकार उसका अन्दर से शुरू होकर बाहर फैलता है। राजनैतिक स्तर पर बौद्ध धर्म किसी पक्ष में नहीं पड़ता है। उसके पास मैत्री का ही सबसे बड़ा बल है, जो तटस्थ है और सम्पूर्ण विश्व को अपने में समेटे हुए है।(1) जब उन के मित्रों या अनुयायों के बीच दुविधा के प्रसंग आए, तो बुद्ध ने स्पष्ट रूप से पहले से चली आ रही रीतियों का सम्मान करने को कहा। एक बार जब गौतम बुद्ध के मित्र प्रसेनादी को पता चला कि उन की पत्नी पूरी शाक्य नहीं, बल्कि एक दासी से उत्पन्न शाक्य राजा की पुत्री है, तब उस ने उस का और उस से हुए अपने पुत्र का परित्याग कर दिया। किन्तु बुद्ध ने अपने मित्र को समझा कर उस का कदम वापस करवाया। तर्क यही दिया कि पंरपरा से संतान की जाति पिता से निर्धारित होती है, इसलिए शाक्य राजा की पुत्री शाक्य है। यदि बुद्ध को जाति-प्रथा से कोई विद्रोह करना होता, या नया मत चलाना होता, तो उपयुक्त होता कि वे सामाजिक, जातीय परंपराओं का तिरस्कार करने को कहते। बुद्ध ने ऐसा कुछ नहीं किया। कभी नहीं किया।(2)

बौद्ध धर्म दुनिया के बड़े धर्मों में से एक है। इसके संस्थापक गौतम बुद्ध थे। जिन्हे शाक्यमुनि के नाम से भी जाना जाता है। ईसाई और इस्लाम धर्म से पहले बौद्ध धर्म नहीं आया था।

इन दोनों धर्मों के बाद बौद्ध धर्म की गिनती दुनिया के बड़े धर्मों में होने लगी। इस धर्म को मानने वाले लोग भूटान, नेपाल, भारत, श्रीलंका, चीन, जापान, कम्बोडिया, थाईलैंड और कोरिया में देखने को मिलते हैं। इन देशों के अलावा ऐसे कई अन्य देश भी हैं जो इस धर्म का पालन करते हैं।(3)

I. बौद्ध धर्म का इतिहास

बौद्ध धर्म की स्थापना गौतम बुद्ध ने की थी और इन्हे एशिया का ज्योति पुंज भी कहा जाता है। गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसवी में लुम्बनी नेपाल में हुआ था। इनके बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन था। गौतम बुद्ध के जन्म के कुछ दिन पश्चात ही उनकी माता मायादेवी का देहांत हो गया और फिर इनका पालन – पोषण इनकी सौतेली माता गौतमी ने किया था। जब इनकी माता सिद्धार्थ को जन्म देने वाली होती हैं तब इनको एक सपना आता है कि एक सफ़ेद हांथी इनके पास आ रहा है और इनके चरणों में कमल अर्पित कर रहा है। ऐसा सपना देखकर इनकी माँ आश्चर्यचकित हो जाती हैं और विद्वानों से पूछती हैं। तब विद्वान बताते हैं कि इसके दो कारण हो सकते हैं – या तो तुम्हारा बेटा इस पृथ्वी पर राज्य करेगा या वो धर्म का पाठ पढ़ाने वाला बनेगा।

Sudarshan Research Journal
Volume – 1, Issue - 6, October-2023
ISSN No: 2583-8792
Impact Factor: 3.179 (SJIF)

II. भगवान बुद्ध का परिचय

भगवान बुद्ध को गौतम बुद्ध, सिद्धार्थ और तथागत के भी नाम से जाना जाता है। बुद्ध के पिता का नाम कपिलवस्तु था, वह राजा शुद्धोदन थे और इनकी माता का नाम महारानी महामाया देवी था। बुद्ध की पत्नी का नाम यशोधरा था और उनके पुत्र का नाम राहुल था। भगवान बुध का जन्म वैशाख माह की पूर्णिमा के दिन नेपाल के लुम्बिनी में ईसा पूर्व 563 को हुआ। यह बात जानने के लिए मीली की इसी दिन 528 ईसा पूर्व उन्होंने भारत के बोधगया में सत्य को जाना और साथ में इसी दिन वे 483 ईसा पूर्व को 80 वर्ष की उम्र में भारत के कुशीनगर में निर्वाण (मृत्यु) को उपलब्ध हुए।(4)

III. भगवान बुद्ध का इतिहास

बौद्ध धर्म भारत की श्रमण परम्परा से निकला धर्म और दर्शन है। इसके संस्थापक भगवान बुद्ध, शाक्यमुनि (गौतम बुद्ध) थे। बुद्ध राजा शुद्धोदन के पुत्र थे और इनका जन्म लुंबिनी नामक ग्राम (नेपाल) में हुआ था। वे छठवीं से पाँचवीं शताब्दी ईसा पूर्व तक जीवित थे। उनके गुज़रने के बाद अगली पाँच शताब्दियों में, बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फ़ैला, और अगले दो हज़ार सालों में मध्य, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी जम्बू महाद्वीप में भी फ़ैल गया। आज, बौद्ध धर्म में तीन मुख्य सम्प्रदाय हैं: थेरवाद, महायान और वज्रयान। बौद्ध धर्म को पैंतीस करोड़ से अधिक लोग मानते हैं और यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा धर्म है। गौतम बुद्ध ने जिस ज्ञान की प्राप्ति की थी उसे 'बोधि' कहते हैं। माना जाता है कि बोधि पाने के बाद ही संसार से छुटकारा पाया जा सकता है।(5)

IV. भगवान बुद्ध के सिद्धान्त

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म में सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनीतिक, स्वतंत्रता एवं समानता की शिक्षा दी है। बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी अनात्मवादी है अर्थात इसमें ईश्वर और आत्मा की सत्ता को स्वीकार नहीं किया गया है, किन्तु इसमें पुनर्जन्म को मान्यता दी गयी है। बुद्ध ने सांसारिक दुःखों के सम्बन्ध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया। ये आर्य सत्य बौद्ध धर्म का मूल आधार हैं, जो इस प्रकार हैं-

बौद्ध धर्म की विशेषताएं

बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

- बौद्ध धर्म के द्वारा अनात्मवाद को माना जाता है। महात्मा बुद्ध के अनुसार इसका अर्थ यह है कि संसार में ना कोई आत्मा है और ना ही आत्मा की तरह कोई अन्य वस्तु।
- बौद्ध धर्म "मध्यममार्ग-" में विश्वास रखता है।

- पशुओं और अहिंसा की रक्षा पर बौद्ध धर्म जोर देता है।
- महात्मा बुद्ध के अनुसार मानव स्वयं अपने भाग्य का निवारण करने वाला होता है, को ईश्वर नहीं होता है। इसलिए बौद्ध धर्म वेदों और ईश्वर की प्रमाणिकता पर विश्वास नहीं करता है।
- बौद्ध धर्म की सारी शिक्षा का सारांश 'चार्य आर्य सत्य' में मिलता है।(7)

बुद्ध का यह व्यवहार सुसंगत था। तुलनात्मक धर्म के प्रसिद्ध ज्ञाता डॉ. कोएनराड एल्स्ट ने इस पर बड़ी मार्के की बात कही है कि जिसे संसार को आध्यात्मिक शिक्षा देनी हो, वह सामाजिक मामलों में कम से कम दखल देगा। कोई क्रांति करना, नया राजनीतिक-आर्थिक कार्यक्रम चलाना तो बड़ी दूर की बात रही! एल्स्ट के अनुसार, 'यदि किसी आदमी के लिए अपनी ही मामूली कामनाएं संतुष्ट करना एक विकट काम होता है, तब किसी कल्पित समानतावादी समाज की अंतहीन इच्छाएं पूरी करने की ठानना कितना अंतहीन भटकाव होगा!'(8)

अतः यदि बुद्ध को अपना आध्यात्मिक संदेश देना था, तो यह तर्कपूर्ण था कि वे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व्यवस्थाओं में कम-से-कम हस्तक्षेप करते। उन की चिन्ता कोई 'ब्राह्मण-वाद के विरुद्ध विद्रोह', राजनीतिक कार्यक्रम, आदि की थी ही नहीं, जो आज के मार्क्सवादी, नेहरूवादी या कुछ अंबेदकरवादी उन में देखते या भरते रहते हैं। इसीलिए स्वभावतः बुद्ध के चुने हुए शिष्यों में लगभग आधे लोग ब्राह्मण थे। उन्हीं के बीच से वे अधिकांश प्रखर दार्शनिक उभरे, जिन्होंने समय के साथ बौद्ध-दर्शन और ग्रंथों को महान-चिंतन और गहन तर्क-प्रणाली का पर्याय बना दिया।

यह भी एक तथ्य है कि भारत के महान विश्वविद्यालय बुद्ध से पहले की चीज हैं। तक्षशिला का प्रसिद्ध विश्वविद्यालय गौतम बुद्ध के पहले से था, जिस में बुद्ध के मित्र बंधुला और प्रसेनादी पढ़े थे। कुछ विद्वानों के अनुसार स्वयं सिद्धार्थ गौतम भी वहाँ पढ़े थे। अतः यह कहना उपयुक्त होगा कि बौद्धों ने उन्हीं संस्थाओं को और मजबूत किया जो उन्हें हिन्दू समाज द्वारा पहले से मिली थी। बाद में, बौद्ध विश्वविद्यालयों ने भी आर्यभट्ट जैसे अनेक गैर-बौद्ध वैज्ञानिकों को भी प्रशिक्षित किया। इसलिए, वस्तुतः चिंतन, शिक्षा और लोकाचार किसी में बुद्ध ने कोई ऐसी नई शुरुआत नहीं की थी जिसे पूर्ववर्ती ज्ञान, परंपरा या धर्म का प्रतिरोधी कहा जा सकता हो।(9)

ध्यान दें, बुद्ध ने भविष्य में अपने जैसे किसी और ज्ञानी ('मैत्रेय', मित्रता-भाईचारा का पालक) के आगमन की भी भविष्यवाणी की थी, और यह भी कहा कि वह ब्राह्मण कुल में जन्म लेगा। यदि बुद्ध के लिए कुल, जाति और वंश महत्वहीन होते, तो वे ऐसा नहीं कह सकते थे। उन्होंने अपने मित्र प्रसेनादी को वही समझाया, जो सब से

प्राचीन उपनिषद में सत्यकाम जाबालि के संबंध में तय किया गया था कि यदि उस की माता दासी भी थी, तब भी परिस्थिति उस के पिता को ब्राह्मण कुल का ही कोई व्यक्ति दिखाती थी, अतः वह ब्राह्मण बालक था और इस प्रकार अपने गुरू द्वारा स्वीकार्य शिष्य हुआ। उसी पारंपरिक रीति का पालन करने की सलाह बुद्ध ने अपने मित्र को दी थी।

इसीलिए वास्तविक इतिहास यह है कि पूर्वी भारत में गंगा के मैदानों वाले बड़े शासकों, क्षत्रपों ने गौतम बुद्ध का सत्कार अपने बीच के विशिष्ट व्यक्ति के रूप में किया था। क्योंकि बुद्ध वही थे भी। उन्हीं शासकों ने बुद्ध के अनुयायियों, भिक्षुओं के लिए बड़े-बड़े मठ, विहार बनवाए।(10)

जब बुद्ध का देहावसान हुआ, तब आठ नगरों के शासकों और बड़े लोगों ने उन की अस्थि-भस्मी पर सफल दावा किया थाः 'हम क्षत्रिय हैं, बुद्ध क्षत्रिय थे, इसलिए उन के भस्म पर हमारा अधिकार है।' बुद्ध के देहांत के लगभग आधी शती बाद तक बुद्ध के शिष्य सार्वजनिक रूप से अपने जातीय नियमों का पालन निस्संकोच करते मिलते हैं। यह सहज था, क्योंकि बुद्ध ने उन से अपने जातीय संबंध तोड़ने की बात कभी नहीं कही। जैसे, अपनी बेटियों को विवाह में किसी और जाति के व्यक्ति को देना, आदि।

अतः ऐतिहासिक तथ्य यह है कि हिन्दू समाज से अलग कोई अ-हिन्दू बौद्ध समाज भारत में कभी नहीं रहा। अधिकांश हिन्दू विविध देवी-देवताओं की उपासना करते रहे हैं। उसी में कभी किसी को जोड़ते, हटाते भी रहे हैं। जैसे, आज किसी-किसी हिन्दू के घर में रामकृष्ण, श्रीअरविन्द या डॉ. अंबेदकर भी उसी पंक्ति में मिल जाएंगे जहाँ शिव-पार्वती या राम, दुर्गा, आदि विराजमान रहते हैं। गौतम बुद्ध, संत कबीर या गुरू नानक के उपासक उसी प्रकार के थे। वे अलग से कोई बौद्ध या सिख लोग नहीं थे। (11)

V. सन्दर्भ-सूची

I. सामन्तफलसुत, दीघनिकाय, प्रथम भाग, पृ0 45-52.
II. सामन्तफलसुत, दीघनिकाय, प्रथम भाग, पृ0 73°
III. बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, पृ0 356.
IV. धम्मपद, 187,58,59°
V. धम्मपद, 296-301 तक
VI. अमेरिकी राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, प्रतियोगिता दर्पण, अप्रैल, हिन्दी मासिक पत्रिका
VII. शतकम जनसंख्या नियंत्रण, डॉ. डी. एन. त्रिपाठी.
VIII. शतकम जनसंख्या नियंत्रण, डॉ. डी. एन. त्रिपाठी.

IX. शतकम जनसंख्या नियंत्रण, डॉ. डी. एन. त्रिपाठी.

X. प्रो. रमेश जैन : पर्यावरण मीडिया एवं कानून.

XI. डॉ. किशना राम बिश्नोई एवं नरसी राम बिश्नोई : धर्म और पर्यावरण भाग-1.

XII. जन सम्मान अक्टूबर 2011 पृ. 28

XIII. धम्मपद, 185-86°

XIV. धम्मपद, 294-300 तक